शहादते हुसैन

जनाब पं० गोपीनाथ साहब ''अम्न'' दहलवी

मैं और ज़िक्र शहादते हुसैन (अ० स०)!
''चे निस्बत खाक रा बा आलमे पाक''
मगर हाँ खाक की एक निस्बत ज़रूर है

वरना इमाम अली (अ० स०) अबूतुराब क्यों कहलाते? इमाम हुसैन पंजतन पाक की अंतिम कड़ी है। उसी तरह जैसे हज़रत मुहम्मद (स०) नबूवत की आखरी कड़ीं हैं किसी का नबी-ए-आखिर की शान में कथन है:-

हुस्ने यूसूफ दमें ईसा यदे बैज़ा दारी!
ऊँचे खूबाँ हमा दारन्द तू तनहादारी'

इसी प्रकार इमाम हुसैन ने भी अपने चारों पेशरवों के तमाम मुहासिन लिए थे जभी तो कवि ने कहा

''निकला यह नूर नूरे रिसालत माआब से
जिस तरह कोई इत्र निचोड़े गुलाब से '

परन्तु मेरा यह मनसब नहीं कि उन तमाम बातों पर रौशनी डालूँ जो बेसते रसूल से लेकर शहादते इमाम हुसैन (अ०) तक सामने आयीं मैं तो चन्द सीधी सीधी बातें लिखना चाहता हूँ कि आज की दुनियां इमाम हुसैन (अ०) से क्या शिक्षा ले सकती है?

राजनीतिः-

चूँकि आजकल सारे संसार पर राजनीति छाई हुई है अतः सब से पहले सियासत ही को ले लीजिए। कुछ लोग पश्चिमी शिक्षा के दबाव में आकर यह समझते हैं कि राजनीति में सब कुछ चलता है परन्तु मैं ऐसा नहीं मानता और कोई मुसलमान तो ऐसा किसी दशा में नहीं मान सकता जब धर्म से राजनीति को अलग नहीं किया जा सकता तो फिर राजनीति में मक्र व धौका धड़ी करने का अर्थ तो यह हुआ कि गोया धर्म धोका धड़ी और चाल-बाज़ी के लिये लाया जा रहा है। इमाम हुसैन (अ०) ने चौदह सौ वर्ष पहले यह शिक्षा दी कि राजनीति को भी और जीवन के व्यतीत करने के तरीकों की तरह हक़ पर आधारित होना चाहिये। यह अवश्य है कि इसका मूल्य बहुत देना पड़ता है परन्तु इस मूल्य से ही क़ौमों की साख बनती है इमाम हुसैन (अ०) अगर शहीद न होते तो मुसलमान आज कहाँ होते और होते भी तो क्या होते। कवि इकबाल ने कितनी अच्छी बात कही है।

ये शहादत गहे उलफ़त में क़दम रखना है
लोग आसान समझते हैं मुसलमाँ होना।

दर असल जिन लोंगों ने मसलेहतन इस्लाम धर्म को अपनाया वह दिल से हक पर आधारित राजनीति में विश्वास नहीं रखते थे और एक दिन उन्ही के हाथों इमाम हुसैन शहीद हुऐ हुसैन ने जो बात कही सीधी सच्ची कही मुखालिफों चालबाज़ियों से काम लिया और इमाम हुसैन (अ०) को अपने साथियों के साथ शहीद होना पड़ा अब सवाल यह है कि हार किसकी हुई इसे दो वाक्यों में कहा जा सकता है कि हुसैन (अ०) के जिस्म की और यज़ीद के नापाक इरादों की। ज़ाहिर में इसे हुसैन (अ०) की हार कहे तो कहें अल्लाह की निगाह में यह हुसैन (अ०) की कामयाबी व कामरानी है। इसी की ओर कवि ने भी इशारा किया है।

क़त्ले हुसैन अस्ल में मर्गे यज़ीद है
इस्लाम ज़िन्दा होता है हर करबला के बाद

कोई राहे हुसैन (अ०) पर चल सके या नहीं लेकिन जब तक अज़मते हुसैन का ऐतेराफ़ है उसे मनुष्यता का सन्देश मिलता रहेगा।

धर्मः-

राजनीति के बारे में तो जैसा ऊपर कहा गया दो विचार हो सकते हैं। परन्तु धर्म के बारे में दो राय नहीं हो सकती। उसे हर हाल में सच्चाई पर मबनी होना चाहिए। यहां केवल एक रास्ता है जिसे ''सिराते मस्तक़ीम'' कहते हैं परन्तु यहां पर थोड़ा सा पस-व पेश है कि शौके शहादत में कहीं रऊनत न आने पाए। हज़ारों सलाम उस महान पवित्र व्यक्ति पर जिसने शौके शहादत के बावजूद इन्तेहाई इन्केसारी से काम लिया। क़दम क़दम पर मुसालेहत की पेश-कश की ताकि बातिल को कोई जवाज का अवसर न मिल सके। यही वह स्थान है जो हर शहीद को नसीब नहीं होता।

आदर्शः-

तीसरी बात आदर्श यानी एखलाके हुसैन(अ०)! इमाम का पूरा जीवन इसका अलातरीन नमूना पेश करता है। प्रत्येक

व्यक्ति से हस्बे मरातिब सुलूक करने का जो वसफ रसूल अल्लाह की ज़ात में पाया जाता है वही इमाम हुसैन (अ०) में भी पाया जाता है। यदि मुहम्मद (स०) के जीवन से जनाबे बिलाल की मिसाल पेश की जा सकती है तो इमाम हुसैन अ० का जीवन जनाबे फ़िज़्ज़ा और जनाबे जौन को दुनिया के सामने पेश करता है। आदर्श के सिलसिले में यह बात नहीं भूलना चाहिये कि उसकी असल कसौटी यह नहीं कि हम लोगों से कैसे मिलते हैं, बल्कि यह कि निचले दर्जे के लोगों से हमारा क्या बर्ताव है। इमाम हुसैन (अ०) ने हमेशा गुलामों से अच्छे से अच्छा सुलूक किया। जनाबे जौन से जो सुलूक किया उसकी तो मिसाल मिलना भी कठिन है।

बहादुरीः-

चौथी बात दिलेरी है सही मानों में केवल ''खुदापरस्त'' हो दिलेर हो सकता है। इमाम हुसैन (अ०) एक मानी में अपने भाई इमाम हसन (अ०) से भी अधिक दिलेर थे यही दिलेरी उन्हें मैदाने कर्बला में लेगई यह वह दिलेरी थी जो बद्र में पहले देखी जा चुकी थी । इसी दिलेरी और बहादुरी को फारसी के कवि ने इस प्रकार पेश किया है।

न मर्द अस्त आं ब नज़दीके खिरद मंद
कि बा पीले दमां पैकार जूयद
बले मर्द अस्त आं अज़ रूए तहक़ीक
कि चूँ खश्म आयदश बातिल न गोयद

इमाम हुसैन (अ०) दिलेरी के इस मेयार पर पूरे उतरते हैं।

ऐ सियासतदानों ! इमाम हुसैन (अ०) से शिक्षा लो वरना यह पशिचमी जल तुमहें तबाह कर देगा।

ऐ धार्मिक लोगों हुसैन (अ०) के बताये हुए रास्ते पर चलो। ज़बानी दावों से कुछ न होगा।

इस बात को मैं शेर की ज़बान में यूँ पेश कर सकता हूँ।

''हुसैनी शान के सजदे हैं सजदे मेरी नज़रों में
ज़बीं फर्साईयों का नाम सजदा हो नहीं सकता''

ऐ मुसन्नेफ़ीने ऐखलाक़ ! कभी सर-व-गरीबां होकर सोचों कि निचले तबके से तुम्हारा सलूक कैसा है। बराबर वालों के साथ बर्ताव से इसकी जांच न होगी हयाते हुसैन (अ०) का मुतालेआ करो और बार बार करो।

ऐ दिलेरी के दावेदारों कभी तुमने अपने नफस से जंग की अगर नहीं तो मैदाने कारज़ार में कितने ही करिश्मे दिखाओ तुम सही मानों में दिलेर हो ही नहीं सकते। हुसैन इब्ने अली (अ०) को सलाम हो जो मुदब्बिर होकर हक परस्त था।

सलाम हुसैन इब्ने अली (अ०) को जो दिलेर होकर मुनकसिर मिजाज था।

सलाम उस हुसैन पर जिसने इस्लाम को दाखली खतरों से बचा लिया और सलाम उस हुसैन इब्ने अली (अ०) को जिसने अपनी जान देकर हर धर्म को मनुष्यता का सन्देश दिया।

पेज नं0 41 का शेष...........

खिसक चुके थे। अब सिर्फ जनाब मुस्लिम यक्कः व तनहा थे। फिर भी आपने हिम्मत न हारी जंग की। जनाब मुस्लिम कूफे से निकल जाना चाहते थे मगर रास्ता न मिलने से आप कूफे में रात भर भटकते रहे। आखिर एक औरत तौआं के यहां क़याम फर्माया। पिसरे तौआ् ने मांजे से छुप कर दुनिया की लालच में यह बात इब्ने ज़ियाद को बता दी कि मुस्लिम उसी के घर में है। तीन हज़ार फौजियों ने जनाब मुस्लिम को घेर लिया। फिर भी अली-ए-मुरतज़ा के भतीजे ने वह जौहर दिखाये कि फौजे भागने लगी।

ग़रज़ कि जब किसी भी तरह से काबू न पाया जा सका तो आपको धोखे से एक ख़स पोश गढ़े में गिरा दिया गया और गिरफ्तार करके इब्ने ज़ियाद के सामने पेश किया गया। उसने आप का सर तन से जुदा करने का हुक्म दिया। पहले तो आप को दारूल इमारा से धकेल दिया गया जब आप ज़मीन पर तशरीफ लाये तो आपके मुंह से कलिमः-ए-शहादतैन निकला। बादे शहादत आपका सर तन से जुदा कर दिया गया और पैरों में रससियाँ बांध कर आपको कूफे की गली कूचों में फिराया गया। इतना ही नहीं बल्कि आपका सर दारूल इमारा पर लटकाया गया।

आपकी शहादत 9 ज़िलहिज्जः 60 हि० को हुई। आपकी शहादत के बाद आपके दोनों फरज़न्दों को भी शहीद कर दिया गया।